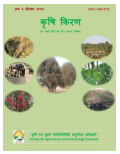

कृषि किरण अंक-6, दिसंबर 2018: पृष्ठ:14-16
http://saaer.org.in

पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान के उद्देश्य एवं लाभ

बलबीर सिंह खद्दा, कनक लता, राजकुमार, शक्ति खजुरिया एवं ए. के. राय
कृषि विज्ञान केंद्र, पंचमहल, (भाकृअनुप-केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान)
गोधरा बड़ौदा हाईवे, वेजलपुर, पंचमहल (गुजरात) - 389340

भारत कृषि प्रधान देश है, जिसकी लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या खेती से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। पशुपालन देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंग होने के बावजूद भी पशुओं की उपलब्धता के अनुरूप विकास नहीं हुआ है। पशुपालन व्यवस्था की चिन्तनीय स्थिति का उत्तरदायित्व पशुओं के प्रजनन प्रबन्धन एवं स्वास्थ्य रक्षा के स्त्रोतों की कमी तथा उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं होना है। इस व्यवस्था में अभी बहुत अधिक विकास की आवश्यकता है ताकि देश की गरीब जनता को कम मूल्य पर दूध एवं उसके उत्पाद सुलभ तरीके से प्राप्त हो सकें। गुजरात की अर्थव्यवथा में कृषि एवं पशुपालन दोनों ही महत्वपूर्ण स्थान रखते है। राज्य की अधिकांश जनसंख्या के लिए पशुपालन मुख्य व्यवसाय एवं आजीविका का साधन है।

कृत्रिम गर्भाधान: प्रजनन की ऐसी विधि, जिसमें पशुओं का प्रजनन नर तथा मादा के बिना समागम के होता है, कृत्रिम गर्भाधान कहलाता है। कृत्रिम गर्भाधान प्राकृतिक विधि के विपरीत है। इसमें नर पशु का वीर्य मनुष्य द्वारा एक विशेष प्रकार की गन (पिचकारी) के द्वारा मादा के जननांग में पहुँचाया जाता है। यह विधि पालतु पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़, बकरी, घोड़ी तथा मुर्गियों आदि के लिए विकसित की गई है। अनेक विकसित देशों में इस विधि ने प्राकृतिक विधि का प्रचलन बिल्कुल समाप्त कर दिया है। भारत वर्ष में इस विधि का प्रचलन स्वतंत्रता के पश्चात् प्रारम्भ हुआ। आज भी इस विधि का उपयोग जितना होना चाहिएए उतना नहीं हो पा रहा है। इसके मुख्य कारण इस प्रकार है-

- उन्नत साण्डों का अभाव
- साधनों का अभाव
- किसानों को इस विधि की सही व पूरी जानकारी न होना
- सुनियोजित प्रजनन कार्यक्रमों का न होना

कृत्रिम गर्भाधान का उद्देश्य: भारत वर्ष में लगभग 70 से 80 प्रतिशत गौवंशीय पशु देशी या

अवर्गीकृत नस्ल के है। इस प्रकार की गाय बहुत ही कम मात्रा में लगभग 176 लीटर दूध प्रति ब्यांत देती है। इसी तरह से ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों द्वारा पाली जाने वाली भैंस 400 से 500 लीटर दूध प्रति वर्ष देती है, जबकि संगठित पशु समूहों में प्रति भैंस लगभग 1500 से 2000 लीटर दूध प्रति ब्यांत देती है। इस प्रकार अवर्गीकृत नस्ल के पशुओं की उत्पादन क्षमता बढ़ाई जा सकती है, जिसे प्रजनन की उन्नतशील विधियों के प्रयोग द्वारा पूरा किया जा सकता है। अतः निम्न कोटि के पशुओं में सुधार का उपाय केवल कृत्रिम गर्भाधान विधि ही है।

कृत्रिम गर्भाधान विधि का मुख्य उद्देश्य शीघ्रता से पशु सुधार करना है, जिससे इन पशुओं का दुग्धोत्पादन बढ़ सके तथा कृषि कार्यों हेतु उत्तम बैल प्राप्त हो सके।

कृत्रिम गर्भाधान के लाभ:

- प्राकृतिक प्रजनन द्वारा एक वर्ष में एक साण्ड द्वारा 60.100 गायें गर्भित की जा सकती है, जबकि कृत्रिम गर्भाधान द्वारा 1000 या अधिक गायें गर्भित कराई जा सकती है।
- उत्तम नस्ल के साण्ड के उपलब्ध न होने पर वहाँ उनके वीर्य का उपयोग किया जा सकता है।
- प्रशिक्षित साण्डों का प्रयोग होने के कारण पशु को जननेन्द्रिय रोग होने की आशंका नहीं होती है।
- कृत्रिम गर्भाधान विधि से बड़े साण्डों का वीर्य छोटी गाय पर प्रयोग में लाया जा सकता है।
- इस विधि द्वारा जो गाय लूलीए लंगड़ी या चोट वाली होए को गर्भित कर उत्पादित बनाया जा सकता है।
- यह पशुओं के प्रजनन अभिलेख रखने में सहायक होती है।
- एक निर्धन पशुपालक, जो अच्छा साण्ड नहीं खरीद सकता, इस विधि द्वारा इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकता है।
- इस विधि द्वारा उत्पन्न सन्तति का उत्पादन बढ़ता है तथा लागत व्यय काम आता है। अतः पशुपालक को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

कृत्रिम गर्भाधान की समस्याएँ:

- धार्मिक भावनाओं के कारण अनुपयोगी पशुओं के वध तथा देशी एवं बेकार साण्डों की बधिया करने में कठिनाई
- कृत्रिम गर्भाधान के बारे में जानकारी की कमी

- कृत्रिम गर्भाधान के प्रति किसानों में घृणा तथा अविश्वास की भावना और जननेन्द्रिय रोग उत्पन्न होने की धारणा होना
- प्रशिक्षित तथा व्यवसाय के प्रति समर्पित व्यक्तियों की कमी

सुधार के उपाय:

- देशी एवं अशुद्ध साण्डों को बधिया कराकर, जिससे वे नस्ल खराब न कर सकें
- अनुपयोगी पशुओं को गौसदन भेजा जाना चाहिए
- गाय में गर्मी के लक्षण प्रकट होते ही उसे कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र पर ले जाना चाहिए
- कृत्रिम गर्भाधान द्वारा गर्भित पशु के मदकालए प्रजनन तथा प्रसव आदि का समुचित अभिलेख रखना चाहिए
- कठिनता से गर्भित पशुओं की गर्भ परीक्षण पशु चिकित्सक द्वारा करानी चाहिए
- पशुओं के गर्भित कराने में लगभग 2 माह बाद गर्भ परीक्षण अवश्य करानी चाहिए
- गर्भाधान द्वारा उत्पन्न बछियों को पुनः सिद्ध साण्डों के वीर्य से गर्भित कराना चाहिए
- कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों पर वीर्य की दशा, शुक्राणु, जाति, तिथि एवं समय का पूर्ण अभिलेख रखना चाहिए